© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 6, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 240-247

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 विनय कुमार सिंह
शोध निर्देशक,
एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग
तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर

सूर्यकान्त सावन
शोधकर्त्ता,
टी0डी0 पी0जी0 कालेज, जौनपुर
सम्बद्ध
वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश – प्रस्तुत अध्ययन **''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''** है। अध्ययन के उद्देश्य के रूप में लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव देखा गया है। प्रस्तुत अध्ययन में कारण एवं प्रभाव देखने का प्रयास किया गया है अतः प्रस्तुत अध्ययन में कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ स्नातक स्तर अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में प्रमोद कुमार (विभागाध्यक्ष) मनोविज्ञान विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ, विद्यानगर द्वारा निर्मित **''संशोधित समायोजन मापनी''** तथा शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए विद्यार्थियों के पिछले वर्ष की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अर्थात् समायोजन उच्च होने पर उनके शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है।
की–वर्ड– स्नातक स्तर, विद्यार्थी, समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि, प्रभाव।

प्रस्तावना– शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य उभरते हुये भारतीय समाज में राष्ट्रीयता की भावना विकसित करना है। आज हमारे देश में बहुत सी समस्याएँ का समाधान नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना का पूर्ण विकास से हो सकता, जिसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका यदि अदा कर सकती है तो वह 'शिक्षा'।

वास्तव में शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने परिस्थितियों तथा वातावरण के मध्य अनुकूलन करना सिखाती है। परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 6, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 240-247

न हो जाना ही समायोजन कहलाता है। वास्तव में समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकाओं की पूर्ति के लिये परिस्थितियों में संतुलन बनाता है। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है इसके द्वारा व्यक्ति अपने औरा वातावरण में संतुलन बनाने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता हैं जो विद्यार्थी अपने वातावरण से जितना अधिक सामंजस्य स्थापित कर पाता है उसके सफलता के आसार उतने ही अधिक बढ़ जाते हैं। जो विद्यार्थी अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है उनमें कुसमायोजन के आसार बढ़ने के साथ–साथ उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व्यक्तित्व एवं संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न होने लगती है।

जीवन में सफलता का महत्वपूर्ण स्थान है, किन्तु यह सफलता व्यक्ति तभी प्राप्त कर सकता है, जबकि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसने समायोजन स्थापित कर लिया हो। स्पष्ट है कि समायोजन सफलता एवं आनन्द का आधार है, इसलिए मानव जीवन का उद्देश्य प्रत्येक क्षेत्र में समायोजन स्थापित करना होना चाहिए। इसके लिए व्यक्ति को निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए। आस–पास के सामाजिक, भौतिक, आध्यात्मिक वातावरण से उपयुक्त सामन्जस्य प्राप्त करना शिक्षित एवं विकसित मानव का एक प्रमुख गुण होना चाहिए। यह सामन्जस्य इस भांति होना चाहिए कि इससे व्यक्ति और समाज दोनों का हित हो। इसी प्रकार मनुष्य को अपनी इच्छाओं, संवेगों तथा शारीरिक एवं मानसिक उद्वेगों से भी उत्तम सामन्जस्य स्थापित करना आवश्यक है। शिक्षा द्वारा बालकों को उपयुक्त वातावरण एवं परिस्थिति से सामन्जस्य स्थापित करने का अभ्यास कराने की आवश्यकता होती है। समायोजन का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक एवं सार्थक सम्बन्ध होता है। जैसा कि पूर्व शोधों से ज्ञात होता है। **कालागौस, ग्लेन एम. (2011)** ने निष्कर्ष में पाया कि कॉलेज जाने वाले नये विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक समायोजन समस्याओं में ऋणात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है अर्थात् उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन समस्यायें में कमी है। **शर्मा एवं पड़ेगाँवकर (2013)** ने अध्ययन में कहा कि किशोरावस्था की छात्राओं के जीवन में मुख्य रूप से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक परिवर्तन होने के कारण बहुत सी संवेगात्मक, सामाजिक तथा व्यावसायिक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। छात्राओं के समुचित विकास के लिये इनकी समस्याओं को जानकर उनका जीवन समाधान करना अत्यन्त आवश्यक है, तभी राष्ट्र की उन्नति संभव है। **वासुकी एवं राज (2015)** ने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों के विद्यालय समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध है। **स्वामी, शिल्पा (2015).** ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– डे–बोर्डिंग विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं कुल समायोजन क्षमता सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पायी गयी जबकि शैक्षिक उपलब्धि सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों में उच्च पायी गयी। **रिचर्ड एवं सुमाथी (2015)** ने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध है। **राजकुमार (2016)** ने अध्ययन में पाया कि बी0एड0 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध है। **सेकर एवं लारेन्स (2016)** ने अध्ययन में पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के

संवेगात्मक, सामाजिक, शैक्षिक समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध है। **जैन, पारस (2017)** ने अध्ययन में पाया कि समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसम्बन्ध है जबकि विद्यार्थियों के समायोजन उच्च स्तर के पाये गये। विद्यार्थियों के गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक एवं विद्यालय समायोजन उनके शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करता है।

पूर्व में प्राप्त अध्ययनों के आधार पर अध्ययनकर्त्ता ने अपने भौगोलिक क्षेत्र में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन के प्रभाव का अध्ययन देखने का प्रयास किया है।

समस्या कथन

''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में कारण एवं प्रभाव देखने का प्रयास किया गया है अतः प्रस्तुत अध्ययन में कार्योत्तर अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 छात्र एवं 100 छात्राएँ स्नातक स्तर अर्थात् कुल 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में प्रमोद कुमार (विभागाध्यक्ष) मनोविज्ञान विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ, विद्यानगर द्वारा निर्मित **''संशोधित समायोजन मापनी''** तथा शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए विद्यार्थियों के पिछले वर्ष की परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 6, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 240-247

उद्देश्य–1 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

सारणी सं0 1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते एफ–अनुपात

स्रोत	df	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F)
समूहों के मध्य	2	49633.57	24816.79	9.70
समूहों के अन्दर	197	506509.71	2558.13	
कुल	**199**	**556143.3**	**27374.92**	

.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 9.70 हैं, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' निरस्त की जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता है।

सारणी सं0 1.1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	63	346.76	8.25	17.36	2.10	**सार्थक**
	मध्यम	93	329.40				
2.	उच्च	63	346.76	9.94	43.76	4.40	**सार्थक**
	निम्न	44	303.00				
3.	मध्यम	93	329.40	9.25	26.40	2.85	**सार्थक**
	निम्न	44	303.00				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 2.10, 4. 40 एवं 2.85 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षा अधिक है जबकि औसत समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। अतः सारणी से स्पष्ट हैं कि उच्च एवं औसत समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न समायोजन रखने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 6, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 240-247

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है अर्थात् स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके समायोजन का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य–2 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

सारणी सं0 2

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते एफ–अनुपात

स्रोत	df	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F)
समूहों के मध्य	2	41594.91	20797.45	8.14
समूहों के अन्दर	97	250254.73	2553.62	
कुल	**99**	**291849.6**	**23351.07**	

.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 8.14 हैं, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' निरस्त की जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता है।

सारणी सं0 2.1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	36	347.36	12.00	7.16	0.60	**असार्थक**
	मध्यम	35	340.20				
2.	उच्च	36	347.36	12.61	47.98	3.81	**सार्थक**
	निम्न	29	299.38				
3.	मध्यम	35	340.20	12.69	40.82	3.22	**सार्थक**
	निम्न	29	299.38				

सारणी संख्या 2.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 0.60, 3.81 एवं 3.81 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च एवं औसत समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षा अधिक है। अतः सारणी से स्पष्ट हैं

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 6, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 240-247

कि उच्च एवं औसत समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न समायोजन रखने वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है अर्थात् स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके समायोजन का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य–3 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की समायोजन का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

सारणी सं0 3

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर को दर्शाते एफ–अनुपात

स्रोत	df	वर्ग योग (SS)	माध्य वर्ग योग (MS)	एफ–अनुपात (F)
समूहों के मध्य	2	32656.20	16328.10	6.93
समूहों के अन्दर	97	230930.56	2356.43	
कुल	**99**	**263586.8**	**18684.53**	

.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 6.93 हैं, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' निरस्त की जाती है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में भिन्नता है।

सारणी सं0 3.1

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	28	347.18	11.84	14.75	1.25	**असार्थक**
	मध्यम	42	332.43				
2.	उच्च	28	347.18	12.76	46.01	3.61	**सार्थक**
	निम्न	30	301.17				
3.	मध्यम	42	332.43	11.60	31.26	2.69	**सार्थक**
	निम्न	30	301.17				

सारणी संख्या 3.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य टी–मान क्रमशः 1.25, 3. 61 एवं 2.69 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च एवं औसत समायोजन वाली छात्राओं

की शैक्षिक उपलब्धि निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षा अधिक है। अतः सारणी से स्पष्ट हैं कि उच्च एवं औसत समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि निम्न समायोजन रखने वाली छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है अर्थात् स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके समायोजन का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् समायोजन विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् समायोजन छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।
3. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एक–दूसरे से भिन्न है अर्थात् समायोजन छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर समायोजन का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

- कालागौस, ग्लेन एम. (2011). एकेडमिक एचिवमेण्ट एण्ड एकेडमिक एडजेस्टमेण्ट डिफिकल्टीज एमंग कॉलेज फ्रेशमैन, इण्टरनेशनल रिफ्ररिड रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम–प्प, इश्शू–3, पृ0 72–76
- शर्मा एवं पड़ेगाँवकर (2013). किशोर बालिकाओं में सुरक्षा की भावना एवं समायोजन का शैक्षणिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ फण्डामेण्टल एण्ड एप्लाईड रिसर्च, वॉल्यूम–1, इश्शू–6, पृ0 3–7।
- वासुकी एवं राज (2015). होम इन्वायरमेण्ट एण्ड स्कूल एडजेस्टमेण्ट ऑन ऐकेडमिक एचिवमेण्ट एमंग सेकेण्डरी लेवेल स्टूडेन्ट्स, वॉल्यूम–1, इश्शू–3, पृ0 159–165
- स्वामी, शिल्पा (2015). उच्च प्राथमिक स्तर पर डे–बोर्डिंग व सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन एवं अध्ययनर आदतें – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, शोध–प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।
- रिचर्ड एवं सुमाथी (2015). ए स्टडी ऑफ इमोशनल एडजेस्टमेण्ट एण्ड एकेडमिक एचिवमेण्ट एमंग सेलेक्टेड हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स इन कोयम्बटुर डिस्ट्रिक, शनलैक्स इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन, वॉल्यूम–3, नं0 3, पृ0 50–54
- **राजकुमार (2016).** बी0एड0 कक्षा के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन, एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम–6(2), पृ0 57–60
- सेकर एण्ड लारेन्स (2016). इमोशनल, सोशल, एजुकेशनल एडजेस्टमेण्ट ऑफ हायर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू एकेडमिक एचिवमेण्ट, आई–मैनेजर्स जर्नल ऑन एजुकेशनल साइकोलॉजी, वॉल्यूम–10, नं0 1, पृ0 29–35

- जैन, पारस (2017). ए स्टडी ऑफ कोरिलेशन बिटविन एडजेस्टमेण्ट एण्ड एकेडमिक एचिवमेण्ट, आई–जर्नल्स : इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल रिलिवेन्स एण्ड कन्सर्न, वॉल्यूम–5, इश्शू–6, पृ0 14–17 |